

संचयन (2) - सपनों के - से दिन

शब्दार्थ

1) ट्रेनिंग - प्रशिक्षण

2) ल'डे - हिसाब-किताब लिखने की पंजाबी प्राचीन लिपि

3) बहियाँ - खाता (दुकान के हिसाब-किताब का बीरा जिसमें लिखा जाए)

4) खेडण - खेलने के

5) चपड़ासी - चपरासी

6) पिटाई - आजकल स्कूलों में विद्यार्थियों को पीटना मना है

7) सतिगुर - सतगुरु

8) हरफनमौला - पारंगत ; विद्वान
हरफन (विद्या) में माहिर

9) जबरन - बलपूर्वक ; जबरदस्ती

10) अठे - यहाँ

11) लीतर - दूटे हुए पुराने खस्ताहल जूते

12) उठे - वहाँ

13) मुजल्ल — निलंबित

14) महकमाए-तालीम — शिक्षा विभाग

Q/A

कोई भी भाषा आपसी व्यवहार में बाधा नहीं
बनती — पाठ के किस अंश से यह सिद्ध
होता है?
→ कोई भी भाषा आपस में बात करने में मुश्किल
नहीं बनती, यह पाठ के इस हिस्से से
पता चलता है — हमारे आधे से अधिक साथी राज्यस्थान
तथा हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार
या दुकानदारी करते थे। जब वे छोटे थे
तो उनकी बोली हमें बहुत कम समझ
आती थी, इसलिए उनके कुछ शब्द
सुनकर हमें हँसी आती थी, लेकिन
खेलते समय सभी एक-दूसरे की बात
समझ लेते। इससे सिद्ध हो जाता है
कि कोई भाषा आपसी व्यवहार में
बाधा नहीं होती।

2. पीटी साहब की 'शाबाश' के तमगों - सी
क्यों लगती थी? स्पष्ट कीजिए।
→ पीटी साहब, प्रीतमचंद बहुत सख्त आदमी
थे। उन्हें किसी ने हँसते हुए या किसी
की तारीफ़ करते हुए नहीं देखा था।
सारे बच्चे उनसे डरते थे। वे मार-माखर
बच्चों की चमड़ी तक छील देते थे।
छोटे बच्चे जमर थोड़ी भी गाड़बड़ करते तो
वे उन्हें बहुत कड़ी सजा देते थे। ऐसे
सख्त पीटी साहब जब बच्चे कोई गलती
नहीं करते थे तो अपनी चमकली आँखें
छीरे से सपकाकर उन्हें शाबाश कहते थे
उनकी यह शाबाशी बच्चों को फ़ौज के
सारे मेडल जीतने जैसे लगती थी।

3. नयी ज़ेणी में जाने और नयी कापियों
और पुरानी किताबों से आती विशेष
गंध से लेखक का बालमन क्यों उदास
हो उठता था?
→ नयी क्लास में जाकर लेखक का बचपन का
मन इसलिए उदास हो जाता था क्योंकि उसे
वही किताबें पढ़नी पड़नी थीं जो दूसरे
लड़कों ने पहली पढ़ी हुई थीं। उसके लिए
पुरानी किताबों का इंतज़ाम हेडमास्टर साहब
करते थे, क्योंकि लेखक के घर की हालत
ज्यादा अच्छी नहीं थी, जबकि दूसरे
बच्चे नई क्लास में नई किताबें खरीदते
थे। लेखक का बचपन का मन नई कापियों
और पुरानी किताबों से आने वाली एक
अलग तरह की महक से उदास हो जाता था।

4. स्काउट परेड करते समय लेखक अपने को महत्वपूर्ण आदमी फौजी जवान क्यों समझने लगता था? लेखक गुरदयाल सिंह, फौजी बनना चाहते थे उन्होंने अच्छे बूट और बढ़िया वर्दी पहने लेफ्ट-राइट करते फौजी जवानों की परेड देखी थी। इसलिए स्काउट परेड के वक्त धोबी की धुली वर्दी, पॉलिश किए बूट और मोझे पहनकर वह खुद को फौजी जवान ही समझता था। स्काउट परेड में जब पीटी मास्टर लेफ्ट-राइट की आवाज या सीटी बजाकर मार्च करवाते थे और उनके राइट टर्न या लेफ्ट टर्न या पीछे मुड़ने की कहने पर लेखक अपने छोटे बूटों की एडियों पर दाएं-बाएं या एक कदम पीछे मुड़कर बूटों की ठक-ठक की आवाज करते हुए खुद को बच्चा न समझकर एक ज़रूरी फौजी समझने लगता था।

5. हेडमास्टर शर्मा जी ने पीटी साहब को क्यों मुअज्जल कर दिया? पीटी साहब चौथी क्लास को फ़ारसी भी पढ़ाते थे। एक दिन बच्चे उनके दिए हुए शब्द-रूप याद करके नहीं आए। इसपर उन्होंने बच्चों को पीठ ऊँची करके बुरी तरह मुर्गा बनने का हुक्म दिया, तो उसी वक्त वहाँ हेडमास्टर साहब आ गए। यह देखकर हेडमास्टर बहुत गुस्सा हो गए। इसी वजह से उन्होंने पीटी साहब को सस्पेंड कर दिया।

6. लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भरे जाने की जगह न लगाने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगा? गुरदयाल सिंह के हिसाब से उन्हें और उनके साथियों को बचपन में स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। चौथी क्लास तक कुछ लोगों को छोड़कर बाकी सब रीते-चिल्लाते हुए स्कूल जाते थे। स्कूल में मार-पिट्टाई और मास्टरों की डाँट-फटकार के कारण स्कूल उन्हें एक बेकार और डरावनी जगह लगती थी, जिसके लिए उनके मन में डर बैठ गया था।

लेकिन कई बार ऐसा भी होता था जब उन्हें स्कूल जाना अच्छा भी लगता था। यह तब होता था जब उनके पीटी सर स्काउटिंग की प्रैक्टिस कराते थे। वे पढ़ाई-लिखाई की जगह लड़कों के होशों में नीली-पीली संधियाँ पकड़ा देते थे, वे वन-टू-थ्री करके इन संधियों को ऊपर-नीचे कराते थे। हवा में लहराती ये संधियाँ बहुत अच्छी लगती थीं। अच्छा काम करने पर पीटी सर की शाबाशी भी मिलती थी, तब यही सख्त पीटी सर बच्चों को अच्छे लगते थे। ऐसे मौकों पर स्कूल आना अच्छा और मजेदार लगता था।

3. लेखक अपने छात्र जीवन में स्कूल से छुट्टियों में मिले काम को पूरा करने के लिए क्या-क्या योजनाएँ बनाया करता था और उसे पूरा न कर पाने की स्थिति में किसकी भूँति बहादुर बनने की कल्पना किया करता था?

→ लेखक अपना काम पूरा करने के लिए अलग-अलग प्लान बनाया करता था। जैसे - हिसाब के मास्टर जी के दिए 200 सवालों को पूरा करने के लिए हर रोज़ दस सवाल करने पर 20 दिन में पूरे हो जाएँगे, लेकिन खेलने-कूदने में छुट्टियाँ बीतने लगतीं, तो मास्टर जी की मार का डर लगने लगता। फिर लेखक हर रोज़ 15 सवाल पूरे करने का प्लान बनाता, तब उसे छुट्टियाँ भी बहुत कम लगने लगतीं और दिन बहुत छोटे लगने लगते और स्कूल का डर भी बढ़ने लगता। ऐसे में लेखक मार से डरने के बाद भी उन लोगों की तरह बहादुर बनने का सोचता, जो छुट्टियों में काम पूरा करने की जगह मास्टर जी से पिटना ही ज्यादा अच्छा समझते थे।

2. पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

→ बाहरी रूप-रंग:
पीटी सर प्रीतमचंद छोटे कद के थे, उनका शरीर पतला लेकिन मजबूत था। उनके चेहरे पर चेचक के दाग थे। उनकी आँखें बाज़ की तरह तेज़ थीं। वे खाकी वर्दी और चमड़े के पंजों वाले बूट पहनते थे। उनके बूटों की ऊँची एड़ियों के नीचे खुरियाँ लगी रहती थीं। बूटों के आगे के हिस्से में पंजों के नीचे मोटे सिरों वाले फील लगे रहते थे।

• अंदरूनी स्वभाव:

* अच्छे टीचर - वे एक अच्छे टीचर थे। वे चौथी कक्षा को फ़ारसी पढ़ाते थे। वे धीलकर याद करने पर जोर देते थे। वे छात्रों को दिन-रात मेहनत करके पढ़ाई करने की सीख देते थे।

* अच्छे सिखाने वाले - वे अच्छा सिखाते। वे स्काउड-गाइड की ट्रेनिंग देते थे। वे छात्रों को अलग-अलग रंगों की झंडियाँ पकड़ाकर हाथ हाथ ऊपर-नीचे करके अच्छी ट्रेनिंग देते थे। उनके इस सिखाने के तरीके से छात्र हमेशा खुश रहते थे। वे अच्छा काम करने पर छात्रों को शाबाशी भी देते थे।

* सख्त पसंद — उन्हें अनुशासन बहुत पसंद था। वे छात्रों को डराकर रखते थे। अगर कोई लड़का अपना सिर इधर-उधर हिला लेता था तो वे उस पर बाध की तरह झपट पड़ते थे। प्रार्थना करते वक्त भी अनुशासन तोड़ने वालों को सजा देते थे।

* कोमल दिल वाले — प्रीतमचंद बाहर से सख्त लेकिन अंदर से नरम थे। उन्होंने अपने घर में तोते पाले हुए थे, वे उनसे बातें करते थे और उन्हें भीगे हुए बादाम भी खिलाते थे। इसके अलावा वे छात्रों के सही काम करने पर उन्हें शाबाशी भी देते थे।

9 विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में अपनी गई युक्तियों और वर्तमान में स्वीकृत मान्यताओं के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।

→ विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पाठ में जो तरीके अपनाए गए हैं, वे इस तरह थे —

* पीटी साहब डंडे से मार-मारकर बच्चों की चमड़ी तक छील देते थे। लीस्सी चौथी क्लास के बच्चों से गलती हो जाती, तो उन्हें कड़ी सजा मिलती थी ताकि वे विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की नींव जीवन में मजबूत कर सकें। इसके साथ-साथ विद्यार्थियों को बड़ावा देने और बुरा करने के लिए उन्हें 'शाबाशी' भी देते थे।

* लेकिन आजकल जो माना जाता है, वो इससे अलग है। शिक्षकों का आज विद्यार्थियों को पीटने का हक नहीं है, इसलिए विद्यार्थी बिना डर अनुशासन पर ध्यान नहीं देते, क्योंकि आजकल पहले की तरह विद्यार्थी शिक्षकों से डरते नहीं हैं। इसके लिए स्कूल और माता-पिता दोनों जिम्मेदार हैं। बच्चों में अनुशासन लाने के लिए उन्हें मारना या डराना ठीक नहीं है। उन्हें घर से अच्छी बातें सिखानी चाहिए, जिससे वे खुद ही अनुशासन सीखें।

10 बचपन की यादें मन को गूदगूदाने वाली होती होती हैं विशेषकर स्कूली दिनों की। अपने अब तक के स्कूली जीवन की खट्टी-मीठी यादों को लिखिए।

→ जब मैं नौवीं कक्षा में पढ़ता था, एक बार मेरी माँ किसी काम से 20 दिनों के लिए बाहर गई थीं। इसलिए मैं बिना होमवर्क किए और बिना लंच लिए स्कूल चला गया। पहले तो टीचर ने मुझे खूब डाँटा। मुझे लगा रहा था की टीचर मुझसे नाराज़ हैं। इसलिए बाद में मैं हिम्मत करके उनसे बात करने गया। मैंने उन्हें बताया कि मेरी मम्मी घर पर नहीं हैं। टीचर ने मुझे अच्छे से समझाया और उन्होंने कहा कि अगर मुझे कोई भी परेशानी हो तो उन्हें बता सकता हूँ, वह मेरी मदद करेंगे।

11. प्रायः अभिभावक बच्चों को खेल-कूद में ज्यादा रुचि लेने पर रोकते हैं और समय बरबाद न करने की निहासत देते हैं। बताइए-

(क) खेल आपके लिए क्यों जरूरी है?

(ख) आप कौन-से ऐसे नियम कायदों को अपनाएंगे जिससे अभिभावकों को आपके खेल पर आपत्ति न हो?

→ (क) खेल हर उम्र के बच्चे के लिए जरूरी है। खेलने से बच्चों का शरीर और दिमाग अच्छे से बढ़ता है। खेल से बच्चों की सोच बढ़ती और विकसित होती है। इससे बच्चों में मिलकर काम करने की भावना आती है। बच्चों में आगे बढ़ने और जीतने की भावना पैदा होती है। खेलों में हिस्सा लेने से बच्चों को अपना और देश का नाम रोशन करने का मौका मिलता है।

(ख) मैं ऐसे नियम अपनाऊंगा जिससे मम्मी-पापा को बुरा न लगे। मैं समय पर खेलूंगा और खेलकर वापस आऊंगा। पढ़ाई पर भी पूरा ध्यान दूंगा। मैं खेलने में उतना ही समय दूंगा जितना जरूरी है। मुतलब, मैं सिर्फ वही नियम अपनाऊंगा जिससे मेरे मम्मा-पापा खुश रहे और उन्हें शांति मिले।